आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : बारहवां | अंक : पहला | मई-2014

करो मन गुरु चरनों से प्रीत 4
(एक शब्द)

इंसानी जामा एक मौका 5
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

सवाल-जवाब 11
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

दुनिया की कल्पना 19
(गुरु अर्जुनदेव जी की बानी)
सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
अहमदाबाद

धन्य अजायब 34
सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71 (राजस्थान)
098 71 50 19 99 (दिल्ली)

उप संपादक
नन्दनी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
099 28 92 53 04
096 67 23 33 04

सहयोगी
रेनू सचदेवा
सुमन आनन्द
राजेश कुक्कड़
परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 मई 2014 -146- **मूल्य - पाँच रुपये**

करो मन गुरु चरनों से प्रीत

करो मन गुरु चरनों से प्रीत,
गुरु चरनों से प्रीत, करो मन गुरु चरनों से प्रीत, *(2)*

1. *यह सपनों का जाल सुहाना, यह दुनियां है रैन बसेरा,*
चला–चली के इस मेले में, सांझ ढली और उखड़ा डेरा, *(2)*
वर्तमान होता जाता है, पल–पल यहाँ अतीत,
करो मन गुरु चरनों से.....

2. *नौकर–चाकर ठाठ–बाट ये, भरी तिज़ोरी में यह माया,*
प्राण पखेरू उड़ जाएं तो, साथ नहीं जाती यह काया, *(2)*
सभी चिता पर रखकर आते, सुत सम्बंधी मीत,
करो मन गुरु चरनों से.....

3. *रात अंधेरी राह अजानी, गहरी नदिया नाव पुरानी,*
सोते–सोते बीत गए युग, अब तो जाग अरे अज्ञानी, *(2)*
विघ्न विनाशक गुरु नाम है, जीवन का संगीत,
करो मन गुरु चरनों से.....

4. *लोहे को सोना कर देता, इतना पावन नाम तुम्हारा,*
पल में सात धाम जा पहुँचा, जिसने मन से तुम्हें पुकारा, *(2)*
कृपाल 'अजायब' के सदा सहाई, जन्म–जन्म का मीत,
करो मन गुरु चरनों से.....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

इंसानी जामा एक मौका

बाबा बिशनदास जी बड़े प्यार से एक कहानी सुनाया करते थे कि एक बहुत ही सुहावना नगर था, उस नगर के लोग भी बहुत खुशहाल थे। वे लोग हर साल एक नया राजा चुनते थे और राजा की आज्ञा का पालन बहुत अच्छी तरह से किया करते थे लेकिन एक साल बाद अपने राजा को जंगल में छोड़ आते थे बेशक जंगल में उस राजा को शेर, कुत्ता या कोई भी जानवर खा जाए! वे सब वहाँ हड्डियों का ढ़ेर हो जाते थे।

इसी तरह उन्होंने एक बहुत समझदार राजा चुना। वह राजा विवेक बुद्धि वाला था उसने सोचा! मुझे यह राज्य एक साल के लिए मिला है प्रजा मेरा कहना मानती है क्यों न मैं वह काम करूं जिससे मैं एक साल बाद अपनी अच्छी जिंदगी बिता सकूं।

राजा ने जंगल का अच्छी तरह मुआयना किया। जंगल की सफाई करवाई और वहाँ बहुत अच्छा आलीशान महल बनवाया। उस महल में अच्छा फर्नीचर भिजवा दिया और उस महल को अपने एक प्यारे मित्र के नाम करवा दिया। एक साल बाद लोग राजा को जंगल में छोड़ आए। इस राजा ने सब इंतजाम पहले से ही किया हुआ था इसलिए वह अपनी जिदंगी सुख से बिताने लगा।

प्यारे बच्चों! यह तो एक कहानी है। हमने इस कहानी से यह शिक्षा लेनी है कि परमात्मा ने हमें यह **इंसानी जामा एक मौका** दिया है। यहाँ मन राजा है और इन्द्रियां प्रजा है। इन्द्रियां मन का हुक्म मानती हैं मन जो भी कहता है इन्द्रियां वही करके दिखाती हैं। हम जानते हैं कि जब आखिरी समय आता है तो हमारे रिश्तेदार

हमें श्मशान में छोड़कर चले आते हैं या मिट्टी के सुपुर्द कर देते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

जब जलिए तब होए भस्म तन, रहे किरम दल खाई।
कच्ची गागर नीर परत है, यह है तन की वडियाई।।

अगर आग के सुपुर्द कर दिया जाता है तो राख बन जाती है। मिट्टी में दबा दिया जाता है तो उसे कीड़े खा जाते हैं। हमारी देह भी कच्चे घड़े की तरह है जिसमें पानी नहीं ठहरता। बिमारियां शरीर को खराब कर देती हैं। बुढ़ापा बिमारियों का घर है परमात्मा ने हमें **इंसानी जामा एक मौका** दिया है। समझदार लोग जिंदगी में वह काम करते हैं जो इस जिंदगी के बाद काम आए।

हमें **इंसानी जामा एक मौका** मिला है। हम इसमें बैठकर वह काम करें जो आखिरी समय में हमारे काम आए। जिसने हमें नाम दिया है उसने हमारी जिम्मेवारी ली है। हम 'शब्द-नाम' की कमाई करके जो पूंजी कमाते हैं हमारा गुरु उसे इकट्ठा करके रखता है। जो बच्चा अपने पिता के कहे अनुसार चलता है पिता उसका हक नहीं रखता बल्कि अपनी कमाई भी उसके हवाले कर देता है, पिता जानता है कि यह बच्चा समझदार है।

गुरमेल सिंह ने अभी शब्द बोला है कि आखिरी समय में माता-पिता, बहन-भाई और किसी समाज ने हमारी मदद नहीं करनी। नौकर-चाकर, कारें, तिजोरी में जो माया है यहाँ का सब सामान हमनें यही छोड़ जाना है। हमारे सगे-संबधी जो प्यार का दम भरते हैं हमारे ऊपर जान वारते हैं जोश से हमारा स्वागत करते हैं, वही हमें अग्नि के सुपुर्द कर आते हैं; मुर्दे को कौन घर में रखता है? सब यही कहते हैं कि इसे जल्दी से जल्दी ठिकाने लगाया जाए।

प्यारेयो! जीते जी हमारे लाखों दोस्त हैं जो हमारे ऊपर जान वारते हैं लेकिन मरे हुए का कौन है? प्रभु ने हमें आँखें संसार देखने के लिए और हाथ खाना खाने के लिए दिए हैं। प्रभु ने हमारे अंदर आत्मा रखी है जिसके होने की वजह से सब हमारे साथ प्यार करते हैं लेकिन हम उसी परमात्मा को भूल गए हैं।

जिस तरह कोई बच्चा नुमाईश देखने के लिए जाता है। वह वहाँ बहुत सी चीजें देखता है। बच्चा इन सब चीजों को देखकर बहुत खुश होता है अगर उसके हाथ से पिता की अंगुली छूट जाती है तब भी सारा सामान उसी तरह रखा होता है लेकिन बच्चा चीखें मारता है फिर पता लगता है कि सुख-शान्ति सामान में नहीं, शान्ति तो पिता की अंगुली पकड़ने में हैं।

इसी तरह अगर हम उस परमात्मा गुरु की अंगुली पकड़कर संसार में घूमेंगे तो हम भी दुनिया में चार दिन शान्ति से गुजार लेंगे; नहीं तो रोते हुए आते हैं और रोते हुए ही चले जाते हैं। यह इंसान जिनकी खातिर बंदर की तरह नाचता है अंत समय में वे ही चिता पर रखकर अग्नि लगा आते हैं। उस समय कोई पुत्र-पुत्री, यार-दोस्त काम नहीं आता। अगर किसी को डाकुओं ने घेरा हुआ हो उस समय कोई मदद करने वाला मिल जाए तो कितनी खुशी होगी! इसी तरह गुरु ने मदद करनी है जिसने हमें 'नाम' दिया है।

हम न सतसंग में जाते है और न गुरु की सेवा करते हैं। हम सतसंग के लिए समय नहीं निकालते दुनिया की बातों में चाहें कितना भी समय लग जाए कुछ याद नहीं रहता। जिसने हमारी मदद करनी है उसके साथ प्यार नहीं। कबीर साहब कहते हैं:

जाके हृदय गुरु नहीं सिख साखां की भूख।
ते नर ऐसे सूख सी ज्यों जंगल विच रूख।।

हृदय में गुरु तभी होगा अगर आप गुरु को प्रकट करेंगे। गुरु को प्रकट करना कोई खाला जी का बाड़ा नहीं अगर गुरु प्रकट करने में एक जिंदगी भी लग जाए तो कम है। आप महात्माओं का इतिहास पढ़कर देखें! गुरु नानकदेव जी ने पत्थरों का बिछौना किया, भूखे-प्यासे रहे; ऊँचे भाग्य हों तो ही परमात्मा से बनती है।

पहले पाई बख्श दर पिच्छो दे गुरु घाल कमाई।
भारी करी तपस्या वड्डे भाग हर स्यों बण आई।।

आप महाराज सावन-कृपाल का इतिहास पढ़कर देखें! उन्होंने कितनी मेहनत की। मेहनत करने से आपके अंदर गुरु प्रकट होगा। रात-दिन सिमरन करें, भूख-प्यास काटें। नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आकर आत्मा से सारे पर्दे उतारकर पारब्रह्म से भी ऊपर चले जाएंगे। सच्चखंड पहुँचकर सतपुरुष के साथ मिलाप करके सतपुरुष का रूप बन जाएंगे। तब गुरु हृदय में रहेगा और परछाई की तरह आपके साथ-साथ चलेगा। ऐसा शिष्य सोते-जागते गुरु गुरु ही करता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर, गुरु बिना मैं नाहीं होर।

प्यारेयो! सन्तमत कथनी का नहीं करने का मत है अगर कोई आदमी नदी के बाहर खड़ा रहे तो क्या वह पार हो जाएगा? उसे नदी पार करने के लिए प्रेक्टिस करनी पड़ेगी, नाव चलानी सीखनी पड़ेगी। हम मेहनत के बिना खेती नहीं कर सकते, डाक्टर या वकील नहीं बन सकते। दुनिया का कोई व्यापार मेहनत के बिना नहीं हो सकता तो क्या बिना मेहनत परमात्मा की भक्ति हो जाएगी? बहुत से प्रेमी बड़े जोश से नाम ले लेते हैं फिर कहते हैं कि अभी समय नहीं आया, सतगुरु अपने आप नाम जपवा लेगा सतगुरु ने ही पाप छुड़वाने हैं। कई लोग सतगुरु की, सतसंग की महिमा तो

गाते हैं लेकिन जब मीट शराब छोड़ने या मेहनत करके खाने का सवाल आता है तब इन लोगों का जोश ठंडा पड़ जाता है।

सन्त संसार में आकर सबको गले लगाते हैं। सबको एक जैसा उपदेश करते हैं। हमें भी चाहिए कि हम इन लड़ाई-झगड़ों से ऊपर उठकर परमात्मा की भक्ति करें। जिस तरह परमात्मा सबको हवा, पानी, बारिश मुफ्त में देता है इसी तरह सन्त-महात्मा अपनी तालीम की कोई फीस नहीं लेते, वे मुफ्त में हमारी सेवा करते हैं अगर हमें ऐसे महात्मा मिल जाएं तो हम उनसे फायदा उठाकर अपने जीवन को सफल बनाएं। **इंसानी जामा एक मौका** है यह बार-बार हाथ नहीं आएगा। स्वामी जी महाराज कहते हैः

अपने जीव की दया पा लो चौरासी का फेर बचा लो।

प्यारे बच्चो! चौरासी लाख योनियों से बचने के लिए अपने ऊपर दया करें, जो अपने पर दया करता है परमात्मा भी उस पर दया करता है। भजन के चोर न बनें। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

जो जो चोर भजन के प्राणी से से दुख सहे।
आलस नींद सतावे उनको नित नित भ्रम गहे।
काम क्रोध के धक्के खावें लोभ नदी में डूब मरे।।

भजन के चोरों को अनेकों बलाएं चिपट जाती हैं। हमनें भजन के चोर नहीं बनना, भजन करके अपने जीवन को सफल बनाना है।

D.V.D-397

***

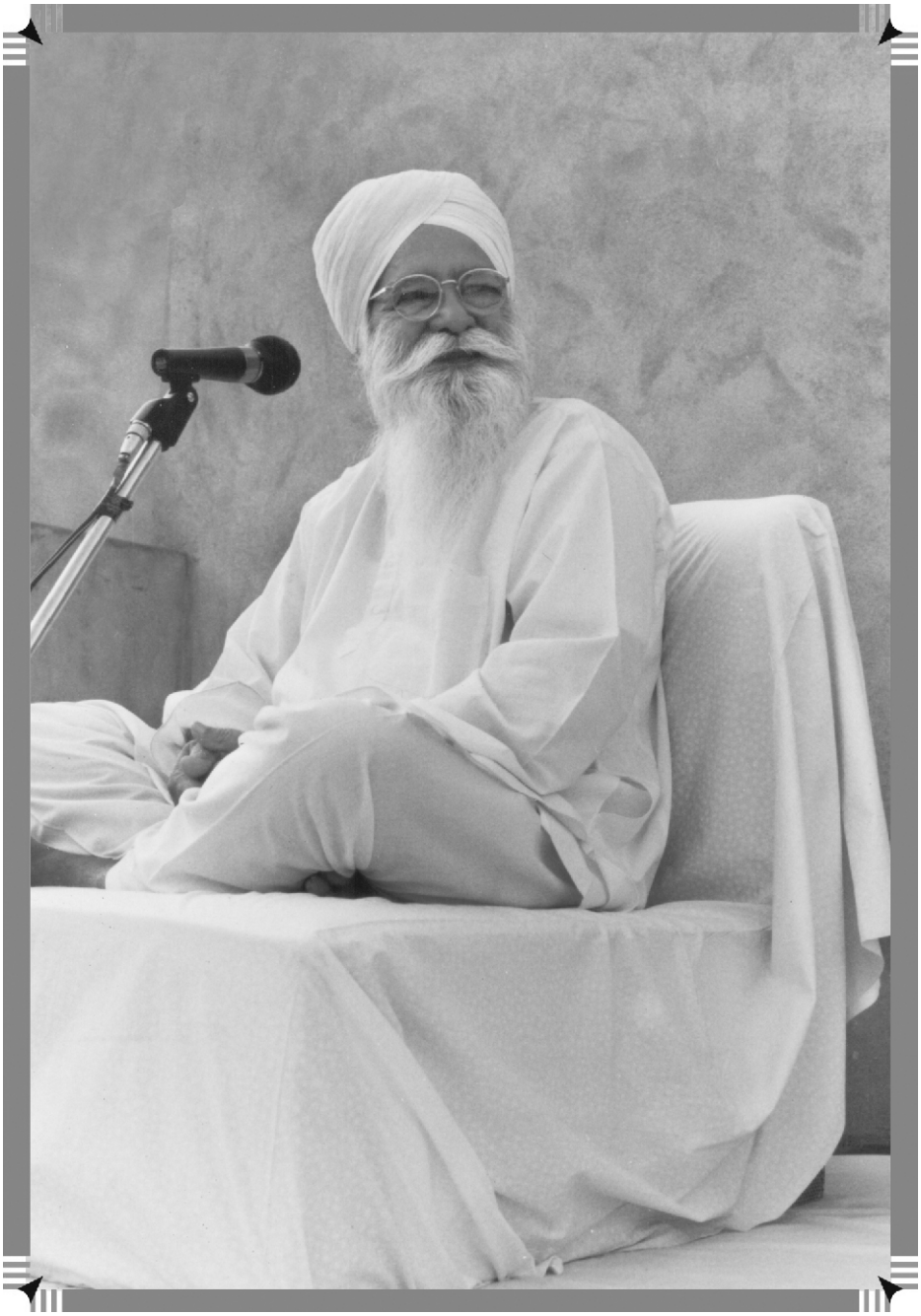

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *क्या सन्तों से यह विनती की जा सकती है कि वे अपनी सेहत की अच्छी देखभाल करें?*

बाबा जी: यह सेवक की अपनी मर्जी है कि वह सन्तों को भजन की प्रसादी देता है या ऐसी सलाह की प्रसादी देता है। सन्त तो सब पर खुश है कोई कैसी भी प्रसादी दे। मैं फिर भी ऐसे प्रेमियों का धन्यवाद करता हूँ जो ऐसी सलाह देते हैं क्योंकि सन्त अपनी सेहत की तरफ से काफी लापरवाह होते हैं।

एक प्रेमी: *आपने जो कहानी सुनाई है कि जब आपकी हालत ठीक नहीं थी आपके शरीर पर फोड़े वगैरहा थे उस समय आपके पिता आराम से नहीं बैठे, वह आपको सन्तों के पास लेकर गए। मैं यह जानना चाहती हूँ कि हमें यह कैसे पता लगे कि यह सब परमात्मा की मौज में है, हमें इसे स्वीकार करना चाहिए या अपनी कोशिश जारी रखनी चाहिए?*

बाबा जी: हमें बहुत समझने की जरूरत है। हमें तो यह भी नहीं पता कि हम कब-कब संसार मण्डल पर आए। इससे पहले हमने कितने पशु और पक्षियों के जामें धारण किए। हम कितनी बार पति, कितनी बार पत्नी, कितनी बार बच्चे या कितनी बार बच्चों के माता-पिता बने? हमें तो इस जन्म के कर्मों का भी पूरा ज्ञान नहीं होता कि हम पुण्य कर रहे हैं या पाप कर रहे हैं अगर हमें यह ज्ञान हो कि यह पाप है तो हम ऐसा कर्म ही न करें। जीव किसी भी जन्म में कर्म किए बिना नहीं रह सकता।

अगर हमने पिछले जन्म में नेक कर्म किए होते हैं तो परमात्मा हमें उन कर्मों का ईनाम देता है कि बचपन से ही हमारे अंदर ऐसी खोज़ जारी कर देता है। सुख-दुख अपने समय पर आते हैं इसी तरह सन्त-सतगुरु का मिलाप भी समय पर होता है। यह हमारे सोचने की बात है कि हमारे अंदर कैसे ख्वाहिश पैदा हुई या किसके जरिए ख्वाहिश पैदा की गई? अगर हम विचार करें तो हमें समझ आ जाती है कि परमात्मा ने हमारे लिए सारा इंतजाम किया हुआ है और परमात्मा हमारे ऊपर दया कर रहा है।

हमारे पिछले कर्मों की वजह से ही हमें अच्छी या बुरी संगत मिलती है अगर हमारे पिछले कर्म बुरे हैं तो उसका हमारी बुद्धि पर बुरा असर होता है, बुद्धि अच्छी नहीं होती। अगर हम अच्छे पुरुषों की संगत में चले भी जाते हैं तो हम वहाँ से कोई फायदा नहीं उठा पाते। अगर हमारे पिछले कर्म अच्छे हैं तो हमारी बुद्धि भी अच्छी होगी और हमें बुरे आदमियों की सोहबत अच्छी नहीं लगेगी; हम वहाँ खड़े ही नहीं होंगे। हम हमेशा अच्छी सोहबत में रहने की कोशिश करेंगे।

प्यारेयो! हम कुदरत के जीव-जन्तुओं को भी देखते हैं कि कुदरत ने जो जानवर माँस खाने वाले बनाए हैं वे जानवर घास नहीं खा सकते और जो जीव-जन्तु घास खाने वाले बनाए हैं वे माँस नहीं खा सकते। यह भी देखा जाता है कि कई बार हमारे घरों में ऐसे जानवर आ जाते हैं जिनसे हमारा वास्ता पड़ता है वे दूसरे जानवर का झूठा पानी भी नहीं पीते, हमेशा साफ पानी पीते हैं। अपनी जगह पर नीचे का गंद भी नहीं पड़ने देते। वे गंद दूर जाकर करते हैं। जिस जगह उन्हें खाने के लिए चारा वगैरहा डालते हैं वे वहाँ से दूर जाकर ही मलमूत्र करते हैं।

मेरे पिछले गाँव का वाक्या है कि वहाँ किसी ने एक कुत्ता रखा हुआ था। किसी आदमी ने उस कुत्ते को गोली मार दी जिससे उसका पिछला हिस्सा जख्मी होकर टूट गया। जिन्होंने वह कुत्ता रखा हुआ था वह घिसटता हुआ उस घर में गया लेकिन उन घरवालों ने उस कुत्ते को अपने घर में घुसने नहीं दिया और न ही पानी वगैरहा पिलाया। वह कुत्ता बाहर गंदी जगह पर ही पड़ा रहा, सारा दिन किसी ने उसकी देखभाल नहीं की।

मेरा आश्रम वहाँ से पाँच-छः सौ फुट की दूरी पर था। रात होने पर वह कुत्ता अपने आपको घसीटता हुआ मेरे आश्रम की ओर आ गया। यह तो मालिक ही जाने कि उसे यह समझ कैसे आई! उन दिनों गाँव से एक आदमी रोज मेरे पास रात के दस बजे आया करता था, जब वह आदमी वापिस जा रहा था तो उसने उस कुत्ते को देखा कि वह दम तोड़ने की हालत में है। उस आदमी ने सोचा कि कोई इसे रस्सी में बाँधकर रास्ते में फैंक गया है, उसने वापिस आकर मुझे यह सब हाल बताया।

मेरा तो शुरु से ही पशु-पक्षियों से प्यार रहा है। यह उस परमात्मा की ही दया है। जब मैं वहाँ गया तो वह कुत्ता अभी जिंदा था उसने अपनी आँखों से मुझे इशारा किया कि मेरी देखभाल करें, मुझे पानी पिलाएं। हम भागकर पानी लाए और कुछ समय तक उसका मुँह पानी में रखा जब उसे कुछ होश आई तो उसने पानी पिया फिर हमने उसे दूध और घी भी पिलाया क्योंकि हमारे यहाँ चोट लगने पर यही देते हैं। हम उस कुत्ते को उठाकर अपने आश्रम में ले आए कि हम इसकी देखभाल करेंगे।

महाराज सावन सिंह जी के नामलेवा सुंदरदास और मैंने उस कुत्ते की दो-तीन महीने तक सेवा की। जब उसे टट्टी-पेशाब

करना होता था तो वह अपनी बोली में बताता था कि मैंने बाहर जाना है, उसने कभी मेरे मकान में गंद नहीं डाला था। हम उसके पीछे का हिस्सा उठा लेते थे और आगे की टाँगों के सहारे वह बाहर चला जाता था। वह तीन-चार महीने में ठीक हो गया लेकिन उसका पीछे का हिस्सा उसी तरह रहा। आठ दस महीने तक वह काफी खुश रहा। वह बिल्कुल एक इंसान की तरह ही था केवल उसकी योनि कुत्ते की थी।

आप सोचकर देखें! उसे किसने बताया कि तू इस तरफ जा तेरी रक्षा करने वाले यहाँ हैं। हमने उसे सावन का दिया हुआ तोहफा ही समझा क्योंकि सुंदरदास सावन का नामलेवा था।

सतसंगी को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि जब भी अच्छा ख्याल आता है या हमारे ऊपर मेहर हो रही होती है उस समय परमात्मा की दया समझें क्योंकि काल हमारे अंदर अच्छा विचार पैदा होने ही नहीं देता, मन कभी नेक सलाह नहीं देता; यह हमारे ऊपर दया करता ही नहीं।

एक प्रेमी: *अगर किसी को शराब पीने की आदत हो तो उसकी मदद करने के लिए या उसकी इस आदत को बदलने के लिए आप उसे क्या सलाह दे सकते हैं?*

बाबा जी: हमें उसे प्यार से समझाना चाहिए कि नशा पीने वाले की क्या हालत होती है। आमतौर पर हमें देखने में मिलता है कि जो लोग ज्यादा शराब, गांजा का नशा करते हैं उनके फेफड़े खराब हो जाते हैं, दिमाग में खराबी आ जाती है। उनके सोचने की शक्ति कम हो जाती है। आजकल हिन्दुस्तान में शराब की बोतलों पर जहर लिखा होता है। अब यह तो पीने वाले की मर्जी है कि उसने जहर पीना है या नहीं?

जब मैंने राज हाई स्कूल संगरूर से ज्ञानी पास की उस समय हमारे स्कूल का प्रिंसिपल भी नशा करने वालों के सख्त खिलाफ था। उसने एक कार्टून बनाया 'पापों का पेड़ शराब।' उस पेड़ की जड़ में शराब की बोतल रखी जब वह पेड़ हरा-भरा हुआ तो उसके ऊपर फल लगे हुए दिखाए उन फलों पर लिखा था पैसे, इज्जत और दिमाग की बर्बादी। नंग और भूख को लाने वाली शराब है।

कई दफा तो लोग शराब पीकर उल्टी कर देते हैं, कुत्ते उस उल्टी को चाट जाते हैं फिर उस शराबी का मुँह भी चाटने लग जाते हैं; इससे बढ़कर और क्या गिरावट हो सकती है?

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''शराब अच्छे भले आदमी की अक्ल को मारकर उसे उल्लू बना देती है। बिना पूंछ के गधा बना देती है, नशा करने वाले और गधे में कोई फर्क नहीं होता। नशा करने वाले आदमी की पूँछ नहीं होती लेकिन वह गधा ही होता है।'' आप शराब को रत करके लिखते हैंः

जे रत लगे कपड़े, जामा होए पलीत।
जो रत पीवे मानसा, तिनको निर्मल चीत।।

आजकल हम सन्तों के संदेश को भूलते जा रहे हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी की साखी में आता है कि शराब पीने वाले की सात कुल नर्क में जाती हैं। छोटे बच्चे बड़ों की नकल करके शराब पीना शुरु कर देते हैं। आखिर सारी फेमिली ही नशा करने वाली बन जाती है। किसी ने कबीर साहब के पास आकर सवाल किया कि नशे के बारे में रोशनी डालें, इनमें क्या बुराई है? कबीर साहब कहते हैं कि मैं आपको ज्यादा क्या कहूँः

औगुण कहूं शराब का, ज्ञानवन्त सुन ले।
मानस से पशुआ करे, दरभ गांठ का दे।।

आजकल तो गर्वमेंट ने बड़े सख्त कानून बनाए हुए हैं। जो लोग नशा करते हुए पकड़े जाते हैं उन्हें सख्त सजा दी जाती है।

पंजाब में दमदमा एक तीर्थ स्थान है। मैं जब आर्मी में था हमें वहाँ शराबियों को पकड़ने का सख्त हुक्म मिला। जो शराबी वहाँ शोर मचाते और तीर्थ यात्रियों को परेशान करते हम उन्हें टाँग से पकड़कर हाथ के सहारे चलाते थे। शराबी अपनी जेब से पैसे खर्च कर शराब पीते, लातों की मार और गालियाँ भी खाते थे। जिनमें नशा घर कर जाता है यह उनके पिछले कर्मों की सजा होती है।

प्यारेयो! नशा करने से इज्जत नहीं मिलती। नशा करने से घरवालों के साथ भी बिगाड़ रहता है। माता-पिता और पत्नी के साथ खटपटी रहती है। अगर हम नशा नहीं करते तो हमारे पैसे बचते हैं और हमारी सेहत भी ठीक रहती है। जो लोग हमारे पड़ोस में रहते हैं वे भी हमारी प्रशंसा करते हैं।

जब मैंने पिछली बार इंग्लैंड का टूर किया तो मैंने वहाँ बहुत जगह इश्तिहार लगे देखे। वहाँ जगत सिंह नाम का एक आदमी पंजाब से गया हुआ था। उसने वहाँ दिन-रात बहुत ज्यादा शराब पी आखिर उसके फेफड़े खराब हो गए। उस इश्तिहार के ऊपर यही लिखा हुआ था कि आखिर जगत सिंह शराब से हार मान गया।

अगर आपके किसी रिश्तेदार या दोस्त को ऐसी आदत है तो आपने उसके साथ लड़ना नहीं। उसने जब नशा न किया हो उस समय उसे प्यार से नशे के नुकसान बताएं। जब उसने नशा किया हो उस समय अगर कुछ कहेंगे तो वह आपकी बात नहीं सुनेगा बल्कि आपका विरोध करेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैः

जिस पीते मत विसरे, विरल पवे विच आए।

आप कहते हैं जिस चीज़ को पीने से आपके सोचने की शक्ति पर बुरा असर पड़ता है अंदर पागलपन पैदा होता है उसे छोड़ने में ही फायदा है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

दुरमत मत जो पीवंदे, विखली मत कमली।
नाम रसायन जो रते, नानक सच अमली।।

किसी भी महापुरुष ने हमें नशों की इज़ाजत नहीं दी। हर महापुरुष ने हमें नशों से बचने के लिए ही उपदेश दिया है।

एक प्रेमीः *महाराज जी! मैंने अभी हाल में ही एक काम छोड़ दिया। उस काम को करने के लिए मुझे कई प्रकार के समझौते करने पड़ते थे इसलिए मुझे वह काम पसंद नहीं था। बाद में मैंने महसूस किया कि मुझे मजबूती से उस काम को स्वीकार करना चाहिए था और अपनी पूरी कोशिश करके उसी काम को सही ढंग से करना चाहिए था।*

बाबा जीः अगर आपके सोचने की शक्ति का एक हिस्सा अभी भी उस तरफ है तो आप बड़ी मजबूती से उस काम को दोबारा शुरु कर सकते हैं। समस्या को देखकर कई बार हमारा कमजोर मन घबरा जाता है। हम मामूली सी समस्या को देखकर काम छोड़ देते हैं लेकिन बाद में वही मन परेशानी भी पैदा करता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर सुबह का भूला शाम को घर वापिस आ जाए उसे भूला न समझें।'' कई बार प्रेमी जल्दबाजी में फैसला करके अपना काम छोड़ देते हैं बाद में सोचते हैं कि हमने गलती की क्योंकि वैसा काम आगे नहीं मिलता फिर लोकलाज महसूस करते हैं कि अगर मैं वहाँ दोबारा गया तो लोग क्या कहेंगे! प्रेमी को ऐसा नहीं सोचना चाहिए अगर फिर से वही काम मिलता है और वे इज्जत देते हैं तो आप काम शुरु करें।

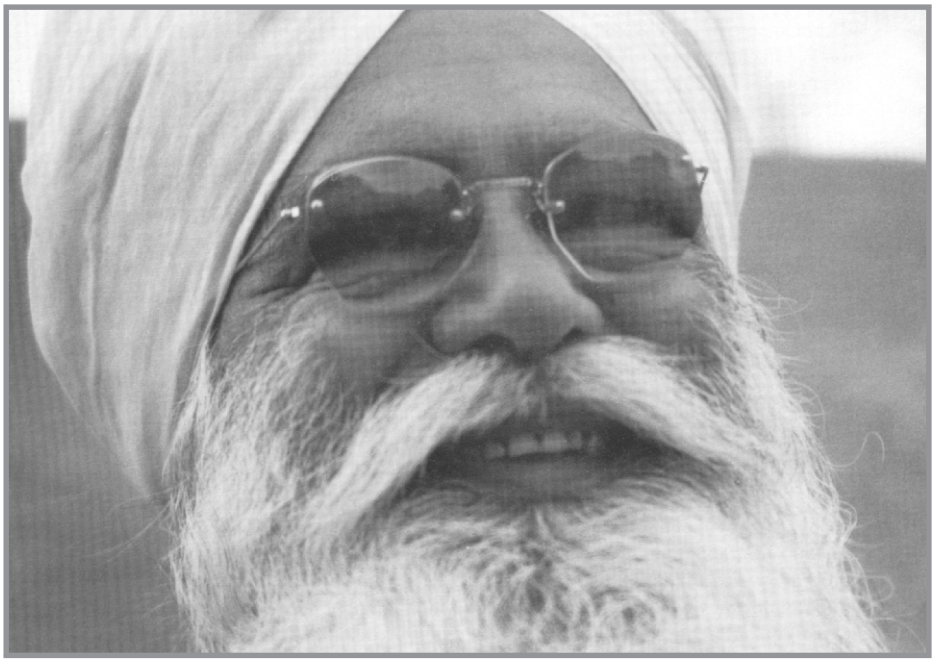

मेरे बचपन का वाक्या है। मैं उस समय बहुत छोटा था। एक बुजुर्ग आदमी घरवालों से रुठकर घर से निकल पड़ा। कईयों की आदत होती है वे रुठकर घर से बाहर निकल जाते हैं, वह भी इसी तरह गाँव से दस-बारह मील दूर चला गया। आगे उसे मैं मिल गया। उसने मुझसे कहा, ''बेटा! मैं बुजुर्ग हूँ, कहते हैं कि दीवार से भी सलाह लेनी चाहिए तू तो फिर भी बच्चा है अगर कोई घर से रुठकर निकल जाए तो उसे क्या करना चाहिए?'' मैंने कहा, ''उसे अपने घर वापिस चले जाना चाहिए।'' उसने कहा, '' अच्छा बेटा! मैं चला जाता हूँ।''

बाद में वह कई बार मुझसे मिलता रहा और यही कहता रहा, ''तू मेरा गुरु है, तूने मुझे अच्छी सलाह दी।''

***

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

दुनिया की कल्पना

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

अहमदाबाद

आओ आओ कृपाल प्यारे दुख दर्द विछोड़ा पल पल दा आओ आओ।

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया, अपनी भक्ति में बैठने का मौका दिया है। एक मोटी लकड़ी का टुकड़ा पानी में बहा जा रहा था और एक नाव भी पानी में चल रही थी। मोटी लकड़ी का टुकड़ा कभी नीचे तो कभी ऊपर जाता उसके दिल में ख्याल आया! नाव भी लकड़ी की है और मैं भी लकड़ी हूँ लेकिन हम दोनों में इतना फर्क क्यों है? जो मेरी सोहबत करता है मैं उसे कभी पानी में डुबो देता हूँ कभी ऊपर ले आता हूँ; मैं न खुद किनारे लग सकता हूँ और न उसे ही किनारे लगा सकता हूँ। जो नाव में सवार हो जाता है वह अपनी मंजिल पर पहुँच जाता है।

उस लकड़ी के टुकड़े ने नाव से सवाल किया कि तुझमें और मुझमें इतना फर्क क्यों है? नाव ने उसे जवाब दिया कि मुझे कुशल कारीगर मिले उन्होंने मेरे जिस्म को चीरा उसके ऊपर रन्दा चलाया फिर पेचदार कील ठोक दिए उस समय मुझे बहुत तकलीफ हुई लेकिन अब मैं पानी के ऊपर तैरती हूँ, मौज करती हूँ। जो मेरी संगत करता है उसे भी उसकी मंजिल पर पहुँचा देती हूँ। यह सब कुशल कारीगरों की मेहरबानी है।

सबसे पहले दिल में शौंक हो फिर कुशल कारीगर मिल जाएं तो उस कारीगर के आगे चूं-चरा किस बात की! यह तो कारीगर की मर्जी है कि वह किस तरह चीर-फाड़ करता है रन्दा चलाता है।

फिर नाव ने कहा कि मैं तुझे एक खास बात बताती हूँ अगर कुशल कारीगर की बजाय कोई ऐसा ही मिल गया जिसे यह पता न हो कि लकड़ी को किस तरह तराशना है किस तरह टुकड़े-टुकड़े करके इस पर कील ठोकने हैं तो तू पहले वाले स्वाद से भी चला जाएगा। लुहार तुझे दो बार जलाएगा, एक बार तेरे कोयले बनाएगा फिर दूसरी बार कोयले बनाकर जलाएगा।

सबसे पहले शिष्य के दिल में विरह और तड़प हो फिर पूरा गुरु मिल जाए तो गुरु की मौज में चलना पड़ता है कि वह हमसे क्या चाहता है? महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सलाम भी करनी और जवाब भी देना दोनों ही झूठ है। न सलाम कुबूल है न जवाब कुबूल है।'' स्वामी जी ने भी कहा थाः

गुरु मिले जब धुन का भेदी शिष्य विरह धर आई।

जिसे प्यास लगी हो उसे ही पानी की कद्र होती है, जिसे प्यास न लगी हो वह सौ नखरे करता है। हमें आर्मी में योगा सिखाया जाता था। योगा में हर अंग की कसरत करवाई जाती है साधन करवाया जाता है जिससे आदमी बड़े हैरानी वाले काम कर सकता है। योगा के शारीरिक फायदे ही होते हैं। इस साधना से साधक शरीर की गाँठ बाँध सकता है हवा में उड़ सकता है। योगा करने से हम हर अंग को अच्छी तरह मोड़ सकते हैं।

कबीर साहब अपनी बानी में धोती और नेती का जिक्र करते हैं। हमारा उस्ताद लाले खान रेशम का डोरा नाक के एक सुराख में डालकर दूसरे सुराख में से निकालना सिखाता था जिससे मगज की मैल साफ हो जाए। आमतौर पर उस डोरे पर मोम लगाई जाती है लेकिन हमारा उस्ताद बहुत सख्त था, वह मोम नहीं लगाने देता था; वह कहता कि तुम प्रेक्टिस करो।

प्यारेयो! इसी तरह सन्तमत में भी हर अंग की साधना करवाई जाती है। आँख, नाक और हर इन्द्री को साधना पड़ता है। हम जहर खाते भी जाते हैं और हाय! हाय! भी करते जाते हैं। हम न आँखों की, न ही किसी और इन्द्री की साधना करते हैं।

आपके आगे गुरु अर्जुनदेव जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है। यह शब्द गौर से सुनने वाला और अमल करने वाला है। हम सन्तों की बानी का कोई मूल्य नहीं दे सकते। सच तो यह है कि हम करोड़ो रूपयों में भी एक लफ्ज नहीं पा सकते। महात्मा की बानी को अपनी जिंदगी में ढ़ालें तो हमारी जिंदगी बन जाती है।

आमतौर पर भाई गुरु-ग्रंथ साहब को दिन-रात पढ़ते हैं। कम से कम बीस भाईयों ने मुझसे 'शब्द-नाम' का भेद लिया है। वे कहते हैं कि हम आपको क्या बताएं हम बानी पढ़ते हैं तो दिल को चोट लगती है। नाम लेने के बाद पता लगता है कि गुरु नानकदेव जी की बानी अमोलक हैं, अच्छी है जिंदगी को बनाने वाली है।

62 आर. बी. राजस्थान के एक भक्त ने 1160 बार गुरु-ग्रंथ साहब का भोग डाला उसके बाद 'नाम' लिया। वह हमारे लंगर में तन-मन से सेवा करता रहा है और उसने अनेकों भाईयों को 'नाम' दिलवाया। मैंने देखा है कि बहुत से सिक्ख उससे गुरु ग्रन्थ साहब का पाठ करवाते, उसे अच्छी तरह नहलाते कि तू असली सिक्ख है; तू माँस नहीं खाता, शराब नहीं पीता और अंदर नाम के साथ जुड़ता है। गुरु अर्जुनदेव जी का शब्द गौर से सुनेः

नैनों नींद पर दृस्ट विकार।। स्त्रवण सोए सुण निंद विचार।।

नींद तो शरीर को आराम देने के लिए है। हम परमात्मा की तरफ से सोए हुए हैं और दुनिया की तरफ से जाग रहे हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हमारी आँखें अच्छे-अच्छे रूप पर जाती हैं, अच्छे-अच्छे खानों की तरफ देखती हैं। हमारी आँखें देखती हैं कि लोगों की इतनी जायदादें कैसे बन गई है? मेरी भी जायदाद बन जाए, मेरे हवाई जहाज भी हवा में उड़ने लग जाएं; ये आँखें नाशवान चीजों को देखती हैं।'' सन्तों की बानी में आत्मा को औरत और परमात्मा को पति कहा गया है। गुरु नानकदेव जी महाराज ने इस लफ्ज को धन-पिर कहा है।

जब मैं पहले टूर पर गया तो पश्चिम की बहुत सी लड़कियों ने यह सवाल उठाया था कि महाराज कृपाल ने जहाँ भी बोला है औरत के लिए ही बोला है इसलिए मैं कभी-कभी शक निकाल देता हूँ कि सन्तों का उपदेश औरत-मर्द के लिए एक समान होता है। गुरु साहब कहते हैं:

प्रथाए साखी महा पुरख बोलदे सांझी सगल जहाने।

सन्तों का उपदेश औरत-मर्द, हर मुल्क और सब जातियों के लिए एक समान होता है। सच तो यह है कि लिंग-भेद, रंग-नस्ल का भेद, अमेरिका-हिन्दुस्तान का भेद भी बाहर ही है। आप बाईबल पढ़कर देख लें! उसमें कहीं नहीं लिखा कि मेरी शिक्षा अमरिकनों के लिए है ईजराईल वालों के लिए नहीं या रशिया वालों के लिए है रोम वालों के लिए नहीं। उनकी शिक्षा तो हर एक के लिए है जो भी उनकी शिक्षा पर चलेगा वह अपने जीवन को सफल बनाएगा।

महाराज सावन और महाराज कृपाल गुरु ग्रन्थ साहब सुनाते रहे हैं। मैं भी आपको गुरु ग्रन्थ साहब सुना रहा हूँ इसमें कोई ऐसा लफ्ज नहीं कि यह ग्रन्थ सिर्फ पंजाबियों, हिन्दुस्तानियों या अमरिकनों के लिए है। सभी महापुरुष सांझी साखी बोलते हैं।

सन्तों की साखियों से वही लोग फायदा उठाते हैं जो उसे अपने अमल में ले आते हैं। आप जपजी साहब में पढ़ते हैंः

सबना जीआ का ऐको दाता सो मैं विसर न जाईं।

मुसलमानों की पवित्र कुरान में आता हैः

रबूल आलमीन।

वहाँ रबूल मुसलमीन नहीं लिखा। परमात्मा सिर्फ मुसलमानों का नहीं परमात्मा तो सारे आलम का है। जब हम महापुरुषों की बानियों को पढ़ते हैं तो यह भेद खत्म हो जाता है हमें समझ आ जाती है। जिस जीवित महापुरुष ने जिंदगी में यह मसला हल किया है जब हम उसके चरणों में बैठते हैं, उसके बताए हुए उपदेश पर चलते हैं तो अपने आप ही हमारा मसला हल हो जाता है।

जब हम सन्त-महात्मा के पास जाते हैं तो वे सबसे पहले हमारे अंदर सतसंग के जरिए 'नाम' जपने का शौंक पैदा करते हैं। हमने अपने आस-पास मकड़ी की तरह विषय-विकारों के जाल बिछाए हुए हैं जिनमें से निकलना हमारे लिए मुश्किल होता है। सन्त-महात्मा कहते हैं, ''बेटा! विषय-विकारों से आपकी जिंदगी खुष्क हो जाएगी आपने जो फंदा अपने गले में डाला हुआ है इसे जितना कसोगे आपको उतनी ही तकलीफ होगी।''

हम महात्मा का सतसंग सुनकर हर किस्म का नशा छोड़ देते हैं। किसी जीव की जान लेकर पेट पालने का धंधा छोड़ देते हैं और हर जीव के अंदर परमात्मा को देखते हैं। उस समय महात्मा हमें 'शब्द-नाम' का भेद देते हैं। सन्त-महात्मा हमें अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं। सिमरन की इतनी महानता है कि हम अपने फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाकर एकाग्र कर सकते हैं।

दुनिया का सिमरन हमें बार-बार दुनिया में खींचकर लाता है। ऐसा कोई आदमी नहीं जिसके सारे काम पूरे हो गए हों किसी के दो काम हो गए तो दो अधूरे रह गए, किसी के दस काम पूरे हो गए और पाँच अधूरे रह गए। हमारे जो काम अधूरे रह जाते हैं अंत समय आने पर हमारे अंदर उन अधूरे कामों के सकंल्प-विकल्प उठने लगते हैं कि मेरा यह काम रह गया! आखिरी वक्त जो संकल्प उठते हैं उनके मुताबिक ही हमारा अगला जन्म होता है।

सन्तों को हमारी इस कमजोरी का ज्ञान होता है। सिमरन की तो हमें पहले से ही आदत पड़ी हुई है। आप देखें! सतसंग में बैठे हुए भी हमारा हृदय **दुनिया की कल्पना** कर रहा होता है। सन्त हमें जो सिमरन बताते हैं पहले हम उस सिमरन को जुबान से करते हैं जब जुबान की मश्क पूरी हो जाती है तो हम मन की जुबान से सिमरन करते हैं जब मन की जुबान की प्रेक्टिस हो जाती है तो आत्मा की जुबान से अपने आप ही सिमरन होना शुरू हो जाता है।

अब **दुनिया की कल्पना** की बजाय अंदर सिमरन की धुन उठनी शुरू हो जाती है फिर कल्पना की तरह अंदर सिमरन होने लग जाता है। जिसका ऐसा सिमरन होता है अगर वह रात को सोते हुए बरड़ाता भी है तब भी अंदर सिमरन की धुन चल रही होती है। बेशक जुबान से कुछ बोले लेकिन अंदर हृदय की **कल्पना** सिमरन में जुड़ी होती है। जिनका सिमरन दुनिया में लगा हुआ है अगर वे सोए हुए भी हैं तो हल्का का झटका लगने की देर है वे इस तरह बोलते हैं, ''मारो! पकड़ो! भाग गया!''

एक बनिए की मिठाई की दुकान थी। जट्ट वहाँ मिठाई खरीदने के लिए गया। जट्ट ने बनिए से मिठाई का भाव पूछा? बनिए ने कहा कि एक रूपये में चार सेर मिठाई मिलेगी। जट्ट ने कहा कि पाँच

सेर मिठाई दे। बनिए ने कहा चार सेर ही देनी है। भाव नहीं बना तो जट्ट चला गया। बैठे-बैठे बनिए को जरा सा नींद का झोंका आया तो वह नींद में बोला, ''चार सेर ही देनी है।'' पड़ोसी महाजन ने देखा कि बनिया सोया हुआ है कोई ग्राहक तो है नहीं। महाजन ने बनिए को हिलाया। अगर हमारी जुबान पर परमात्मा का सिमरन नहीं चढ़ा तो हम सोते हुए भी ग्राहकों से लड़ते-झगड़ते हैं।

बाबा बिशनदास जी बताया करते थे कि एक जट्ट मलमल खरीदने के लिए बनिए की दुकान पर गया लेकिन मोल-भाव नहीं बना। बनिए को नींद के झोंके में घटा-बढ़ाकर भाव जंच गया वह नींद में ही कहने लगा मलमल फाड़ दूं! उसका हाथ अपने ही साफे पर गया तो उसने अपना ही साफा फाड़ दिया। जब उसकी नींद खुली तो उसने देखा न वहाँ जट्ट है न मलमल है, वह अपना ही साफा फाड़कर बैठ गया। कबीर साहब कहते हैंः

सुपने हूं बरड़ायके जे मुख निकसे राम।
तांके पग की पनही मेरे तन को चाम।।

सन्तों के कहने का मतलब है कि आपके लिए सिमरन करना मुश्किल नहीं। अभी भी आप **दुनिया की कल्पना** उठा रहे हैं, सिमरन इस तरह न करें कि जुबान से घंटे भर सिमरन कर लिया फिर पाँच-सात घंटे छोड़ दिया कई बार पांच-सात दिन सिमरन करना छोड़ देते हैं, जब सतसंग में आते हैं तो याद आता है। जब दुनिया के रंग उतर जाते हैं सिमरन का रंग चढ़ जाता है, हम अंदर जाकर एकाग्र हो जाते हैं। आप देखें! तीसरे तिल के साथ हमारा गहरा संबंध है। हम जो कुछ सोचते हैं अंदर जो **कल्पना** उठ रही है वह कल्पना तीसरे तिल से ही उठ रही है। तुलसी साहब कहते हैंः

दिल का हुजरा साफ कर जाना के आने के लिए।
ध्यान गैरों का उठा उसके बिठाने के लिए।।

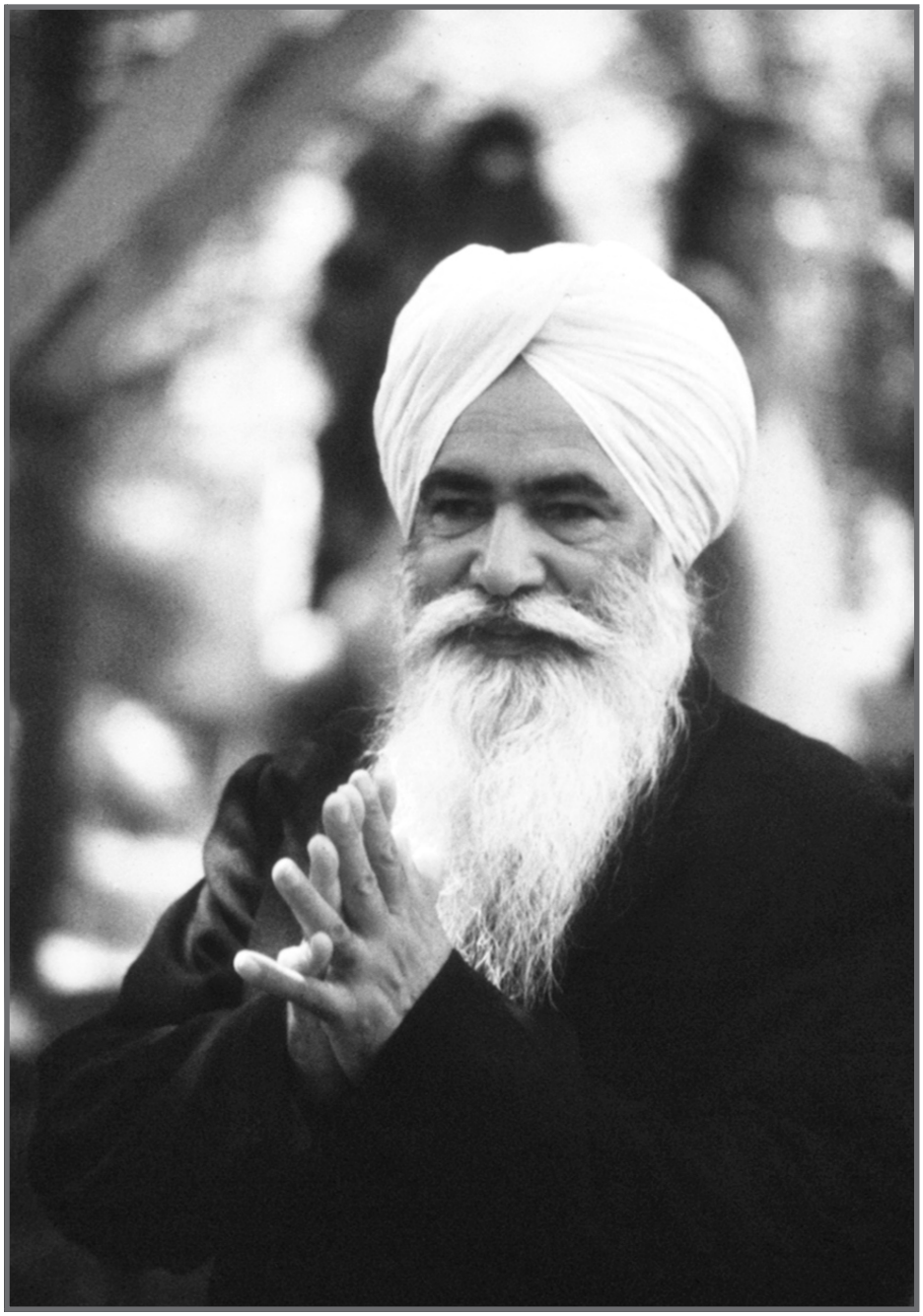

हमने अपने अंदर दुनिया की जो मैं-मेरी बिठाई हुई है उसे सिमरन के जरिए बाहर करें, मालिक को बिठाने के लिए जगह बनाएं। जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाते हैं सतगुरु को अंदर प्रकट कर लेते हैं तो यहाँ आकर हमारा सिमरन समाप्त हो जाता है। किसी चीज़ को बार-बार दोहराने को महात्मा जप कहते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

जाप मरे अजपा मरे अनहद भी मर जाए।
सुरत समानी शब्द को तां को काल न खाए।।

जब हम सन्तों के बताए हुए उपदेश पर चलकर गुरु चरणों तक पहुँच जाते हैं तो हमारा जाप समाप्त हो जाता है। जो जाप हमारे अंदर अपने आप हो रहा है जब हम उसकी हद पार कर जाते है तब स्थूल, सूक्ष्म और कारण के पर्दों को उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं वहाँ जाकर लिंगभेद समाप्त हो जाता है। अमेरिका, हिन्दुस्तान और काले-गोरे का भेद खत्म हो जाता है। सच्चखंड इससे दो मंजिलें ऊपर है।

पारब्रह्म में पहुँचा हुआ सन्त सारी कायनात को अपना घर समझता है उसकी नजर आत्मा पर होती है बुराई मन में है। आप पूर्ण सन्तों की बानियां पढ़कर देखें! उनमें द्वेत-भाव नहीं होता, वे सबका भला चाहते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भांणे सरबत दा भला।

पंजाब में एक मुसलमान की मजार है अगर बारिश न हो तो लोग वहाँ जाकर मन्नत मांगते हैं मुर्गे और शराब चढ़ाते हैं। इस साल बारिश ज्यादा हुई। एक पार्टी पहले मजार पर गई जिनके घर डूब रहे थे उन्होंने पीर से मन्नत मांगी की बारिश न हो। दूसरों ने मन्नत मांगी कि बारिश हो। आप सोचकर देखें! उन्होंने

भगवान को भी दुविधा में डाल दिया। सन्त आकर इस तरह की शिक्षा नहीं देते। सन्त कहते हैं कि आप सबका ही भला मांगे।

आप कहते हैं कि हमारी आँखे दुनिया को देख रही हैं, परमात्मा की तरफ से सोई हुई हैं। हमारे कान पराई निन्दा सुन सुनकर बंद हो गए हैं, परमात्मा का शब्द कहाँ है? महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''निन्दा तो पापी की भी बुरी है अगर हम किसी नामलेवा की निन्दा करते हैं तो किस नर्क में जाएंगे? निन्दा परमार्थ की जड़ काट देती है।'' सन्त बहुत प्यार से कहते हैः

निन्दा भली काहूं की नाहीं मनमुख मुग्ध करन।
मुँह काले तिन निन्दका नर्के घोर पवन।।

रसना सोई लोभ मीठै साद।। मनु सोया माया बिसमाद।।

जीभ अच्छे-अच्छे खाने खाकर मस्त है। मन माया के राग-रंग देखकर मस्त है कि मेरे पास आलीशान मकान है, अच्छी कारें हैं। मेरा कितना अच्छा व्यापार चल रहा है लेकिन मन परमात्मा की तरफ से सोया हुआ है।

इस गृह मह कोई जागत रहै।। साबत वस्त ओह अपनी लहै।।

आप प्यार से कहते हैं कि आँख, कान, जुबान ये सब इस्तेमाल की चीजें हैं। जब हम इन इन्द्रियों का गलत इस्तेमाल करते हैं तो हम खुद भी परेशान होते हैं और ये भी परेशान होती हैं।

मैंने जीभ के मोहताजों की हालत देखी है। चाहे खाना कैसा भी हो वे सबसे पहले बर्तनों पर गुस्सा निकालते हैं फिर कहते हैं, ''ये क्या खाना बना दिया?'' खाने की थाली छोड़कर जाते हुए भी देखे हैं थोड़ा सा आगे जाकर वापिस भी आ जाते हैं। वे खाना खाते हुए बहुत नखरे करते हैं क्योंकि वे जीभ के गुलाम हो चुके होते हैं।

मैं सबसे पहले अपने घर की बात बताया करता हूँ। हमारे पिता जी को खाने में नुख्स निकालने की बहुत आदत थी। मेरी माता ने खाना बनाना लेकिन पिता जी को खाना देकर आने की हिम्मत न माता में थी न मेरी बहनों में थी। उन्हें खाना देकर आने की मेरी ड्यूटी थी। एक दिन मैंने खाने की थाली ले जाकर उनके आगे रखी जैसे ही मैं सिर ऊपर करने लगा तो थाली मेरे सिर के ऊपर से निकल गई। मेरे पिता ने कहा, ''इसे मेरे मत्थे मार क्या लेकर आया है?'' हालाँकि उन्होंने एक निवाला भी नहीं खाया कि यह खट्टा है या मीठा है? मैंने कहा, ''अब स्वाद बन गया?''

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''कोई विरला ही जिसकी आत्मा जागी है वही इन इन्द्रियों के स्वाद से बचा है।'' महाराज कृपाल कहा करते थे कि सच्चाई का बीज नाश नहीं होता। मैंने सुबह भी बताया था कि जब एक बार नाम का रंग चढ़ जाता है तो वह रंग नहीं उतरता। जब एक बार लोहा पारस को छूकर सोना बन जाता है फिर लोहा नहीं बनता। जब एक बार हम इन इन्द्रियों की गुलामी छोड़कर 'शब्द-नाम' के साथ जुड़ जाते हैं फिर हमारे ऊपर दुनिया का असर नहीं होता।

अक-ढ़क तब तक ही है जब तक उनमें चंदन की खुशबू घर नहीं कर जाती। जब चंदन की खुशबू घर कर जाती है फिर दोबारा से उनमें अक्कों जैसी खुशबू नहीं आती। इसी तरह जब एक बार हमारे अंदर 'शब्द' प्रकट हो जाता है, गुरु प्रकट हो जाता है तो ऐसी आत्मा कभी भी इंसानी कमजोरियों की शिकार नहीं होती।

सगल सहेली अपनै रस माती।। गृह अपने की खबर ना जाती।।

पाँच कर्म इन्द्रियां और पाँच ज्ञान इन्द्रियां हैं, ये सब सहेलियां अपने-अपने रस की तरफ खींचती हैं। कानों की इन्द्री अच्छे-अच्छे

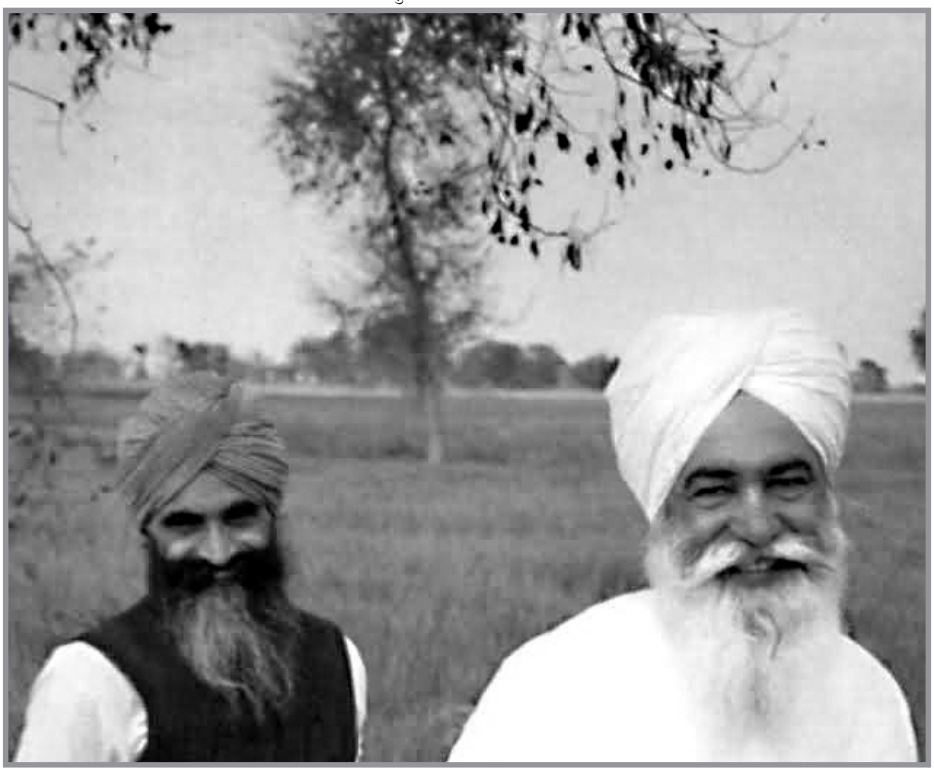

राग पर ले जाती है। जुबान की इन्द्री अच्छे-अच्छे खानों पर ले जाती है। बाकी इन्द्रियों का भी यही हाल है जहाँ इनका चस्का पूरा होता है उस तरफ खींचती हैं। ये सारी इन्द्रियां हमारे खिलाफ भुगतती हैं। नाक भी जवाब देता है कि इसने मुझसे वाशना ली। कान भी जवाब देता है कि इसने निन्दा सुनी। नीचे की इन्द्रियां भी हमारे खिलाफ भुगतती हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अवगुण फिर लागू हुए कूड़ बजाए तूर।

ये अवगुण हमारे ऊपर लागू हो जाते हैं। काल के दूत ठगकर ले जाते हैं, वहाँ जाकर डमरु बजा देते हैं कि हम इसे पकड़कर ले आए हैं; अंदर सच है। बाहर के कम्प्यूटर हमारी जिंदगी का हिसाब-

किताब रखते हैं। परमात्मा ने हमारा हिसाब-किताब रखने के लिए जो कम्प्यूटर बनाया है वह तो इससे भी कहीं ज्यादा तेज है। कहीं यह ख्याल हो! हम जो कुछ करते हैं इसे कोई देख नहीं रहा।

मुसनहार पंच बटवारे।। सूने नगर परे ठगहारे।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''पूँजी को लूटने वाले पाँच है। नगर का मालिक सोया हुआ है अगर घर का मालिक सोया हुआ है तो यह डाकुओ पर मुनस्सर है कि वह घर में कोई सामान छोड़ते हैं या नहीं? जब घर का मालिक जाग जाता है अपनी आई पर आ जाता है इनकी मौजूदगी बर्दाशत नहीं करता तो ये पर लगाकर उड़ जाते हैं।''

उन ते राखै बाप न माई।। उन ते राखै मीत न भाई।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज अपना तजुर्बा बयान करते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के पाँच डाकुओं से माता, पिता, बहन, भाई या कोई यार-दोस्त नहीं बचा सकता क्योंकि उन्हें भी ये रोग लगा हुआ है।

दरब सिआणप ना ओय रहते।। साध संग ओय दुस्ट वस होते।।

ये पाँचों डाकू न पढ़-पढ़ाई से बस में आते हैं न पैसे से बस में आते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी इन्हें कहीं जेबकतरा कहीं डकैत तो कहीं दुष्ट कहकर बयान कर रहे हैं।

अगर जिंदगी में हमें कोई पूर्ण महात्मा मिल जाए और हम उसके कहने के मुताबिक 'शब्द-नाम' की कमाई करें तो शुरू-शुरू में हमें संघर्ष करना पड़ता है लेकिन जब हम एक बार इस संघर्ष में कामयाब हो जाते हैं तो हमारा दृष्टिकोण ही बदल जाता है।

कर किरपा मोहे सारिंगपाण।। संतन धूर सरब निधान।।

अब आप कहते हैं, ''जैसे पपीहा पिरो-पिरो पानी-पानी करता है इसी तरह मैं भी तेरे आगे फरियाद करता हूँ कि तू मुझे बख्श ले, अपने प्यारे सन्त की धूल दे; मेरा बेड़ा पार हो जाएगा।''

साबत पूंजी सतगुर संग।। नानक जागै पारब्रह्म कै रंग।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''सच्चाई यह है कि परमात्मा ने हमें जो साबत पूंजी दी है हम उसे संभालकर तभी ले जा सकते हैं अगर हम पूर्ण गुरु के बताए हुए उपदेश पर चलें, उसकी दया प्राप्त करके पारब्रह्म में पहुँच जाएं; नाम के रंग में रंगे जाएं और **दुनिया की कल्पना** छोड़ दें।''

सो जागै जिस प्रभ किरपाल।। एह पूंजी साबत धन माल।।

वही जागता है जिसके ऊपर वह प्रभु कृपाल हो जाता है, वही यह साबत पूंजी ले जा सकता है।

प्यारेयो! गुरु अर्जुनदेव जी महाराज हमें सुनी-सुनाई बातें नहीं कहते। उन्होंने अपने जीवन को इस तरह ढ़ाला और हमें भी उपदेश दिया। हमारा भी फर्ज बनता है कि हम उनके उपदेश को अपनी जिंदगी में अपनाएं। अपने गुरुओं के कहे मुताबिक 'शब्द-नाम' की कमाई करें, पारब्रह्म में पहुँचें। पारब्रह्म में पहुँचकर ही हम जन्म-जन्म से सोते हुए जागते हैं।

***

DVD No - 579

धन्य अजायब

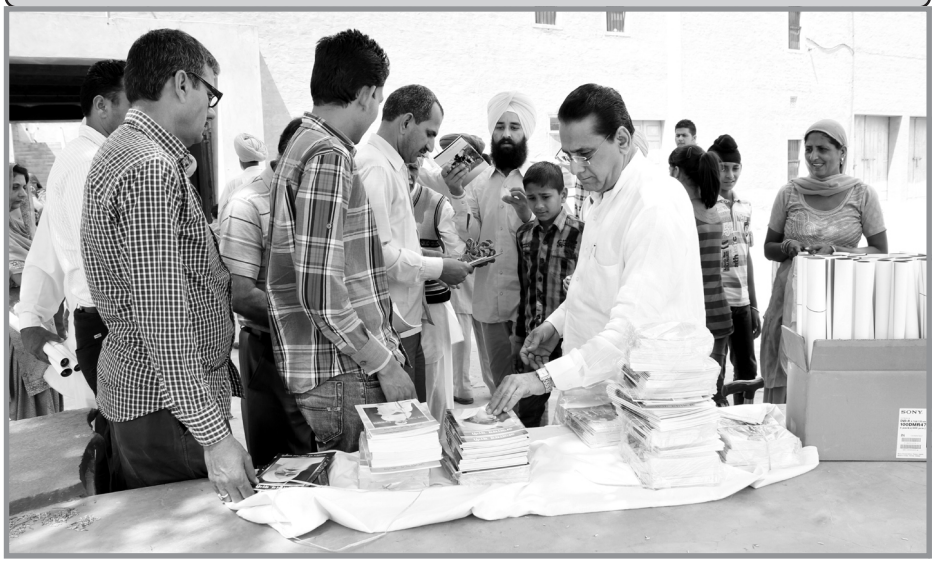

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से दिल्ली में 16,17 व 18 मई 2014 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

कम्युनिटी हाल,

भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार (नज़दीक पीरागढ़ी चौक)

नई दिल्ली - 110 087

4, 5 व 6 जुलाई 2014 को अहमदाबाद में नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है

ईश्वर भवन,

(नजदीक कॉमर्स कालेज क्रॉस रोड), नवरंगपुरा,

अहमदाबाद (गुजरात)

फोन - 99 98 94 62 31 व 97 25 00 57 94